International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 7, 527-528
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

रत्नेष मिश्रा
प्रवक्ता– बी0 एड0
एस0 आर0 एस0 महाविद्यालय
नरैनी, बादॉ उ0 प्र0

Correspondence:
रत्नेष मिश्रा
प्रवक्ता– बी0 एड0
एस0 आर0 एस0 महाविद्यालय
नरैनी, बादॉ उ0 प्र0

भारत में बौ़द्ध कालीन षिक्षा के महान केन्द्र

षिवगोपाल तिवारी, रमाकान्त द्विवेदी

बौद्ध षिक्षा प्रणाली में मठ एंव विहार षिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। इन्ही मठ एंव विहारो मे से कुछ ख्यातिप्राप्त महाविद्यालय एंव विष्वविद्यालय के रूप में प्रतिस्थापित हुए। हम यहॉ प्राचीन भारत कें कुछ महान शैक्षिक केंद्रों की चर्चा कर रहे हैं।

नालन्दा

प्राचीन भारत कें षिक्षा केंन्द्रो में नालन्दा विष्वविद्यालय का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय हैं। यह विहार की राजधानी पटना कें दक्षिण में लगभग 60 किमी0 की दूरी पर आधुनिक बडगॉव नामक ग्राम के समीप स्थित था। चीनी यात्री हेनसांग के अनुसार इसकी स्थापना कुमार गुप्त प्रथम शक्रादित्य ने कराई थी। सम्राट हर्ष के काल तक आते–आते नलन्दा महाविहार एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का विष्वविद्यालय बन गया। नालन्दा के उत्खनन से पता चलता हैं कि यहॉ आठ बडे कमरे तथा व्याख्यान के लिए तीन सौ छोंटे कमरे थे। यहॉ के भवन भव्य उत्तुंग तथा बहुमंजिले थे। नालंदा के विहारो के अतिरिक्त अनेक स्तूप थे। जिनमे बुद्ध एंव बोधिसत्वो की मूर्तियॉ रखी हुयी थी। सम्राट हर्ष ने इसके व्यय के लिए एक सौ गॉव को दे दी थी। नालन्दा मे न केवल भारत के कोने–कोने से अपितु चीन मंगोलिया तिब्बत कोरिया मध्य एषिया आदि देषो से भी विद्यार्थी षिक्षा ग्रहण करने आते थे। ही–ली यहॉ के विद्यार्थीयो की संख्या दस हजार बताता है। नालन्दा मे अध्ययन अध्यापन का स्तर अत्यन्त उच्च कोटि का था। प्रवेष के लिए कठिन परिक्षा ली जाती थी। जिसमे दस मे दो या तीन विद्यार्थी ही मुष्किल से सफल हो पाते थे। यहॉ के स्नातको का बडा सम्मान था। तथा देष मे कोई भी उनकी समता नही कर सकता था। यद्यपि नालन्दा महायान बौद्ध धर्म की षिक्षा का प्रमुख केन्द्र था परन्तु यहॉ अन्य विषयो की भी षिक्षा प्रदान की जाती थी। पाठक्रम मे महायान तथा बौद्ध धर्म के अठारह सप्रदायो के ग्रथो के अतिरिक्त शब्द विद्या योग चिकित्सा तंत्र विद्या सांख्य दर्षन के ग्रन्थो आदि की षिक्षा व्याख्यानो के माध्ययम से दी जाती थी। विभिन्न विषयो के प्रकाण्ड विद्वान् प्रतिदिन व्याख्यान देते थे जिनमे प्रत्येक विद्यार्थी को उपस्थित होना आवष्यक आवष्यक था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सत्य एंव धर्म का भण्डार कहा है। यहॉ के अन्य विद्वानो मे धर्मपाल, चन्द्रपाल, गुणमति, स्थिरमति, प्रभामित्र, जिनमित्र, ज्ञानचन्द्र नाम आदि उल्लेखनीय है। इन सभी गुरूओ की ख्याति दूर–दूर तक फैली हुई थी। ये सभी विद्वान मात्र अच्छे षिक्षक ही नही थे। अपितु विभिन्न ग्रन्थो के रचनाकार भी थे। इनकी रचनाओ का समकालीन विष्व में बडा सम्मान था। सम्राट हर्ष के बाद लगभग बारहवीं शताब्दी ईसवी तक इसकी ख्याती बनी रही। अन्ततः बारहवीं शताब्दी के अन्त मे आक्रान्ता एंव लुटेरे मुहम्मद गोरी के जनरल मुहम्मद बिन आक्रान्ता बख्तियार खिलजी ने इस विष्वविद्यालय को ध्वस्त कर दिया।

वलभी

गुजरात के कठियावाड क्षेत्र में आधुनिक वल नामक स्थान पर प्रसिद्ध वलभी पष्चिम भारत मे षिक्षा एंव संस्कृति का प्रसिद्ध केन्द्र था यह एक विष्वविद्यालय था। इसकी स्थापना मैत्रक वंष के शासक भट्टार्क ने की थी। वलभी मैत्रक वंष की राजधानी थी। ह्वेनसांग के अनुसार इस नगर मे एक सौ बौद्ध विहार थें। यहॉ भारत के विभिन्न विद्यार्थी आते थें। बौद्धधर्म के साथ–साथ यहा न्याय विधि वार्ता आदि विषय की षिक्षा दी जाती थी।

आठवी शताब्दी ईसवी के अरब आक्रमण से विष्वविद्यालय कि प्रगति अवरूद्ध हो गयी किन्तु जब पुनः शान्ति स्थापित हुयी तो मैत्रको के उत्तराधिकारियों ने विष्वविद्यालय को पुनः संरक्षण एंव सहायता प्रदान किया वारहवीं शताब्दी के अन्त तक षिक्षा केन्द्र के रूप मे वलभी कि प्रसिद्धि बनी रही

विक्रमषिला

विहार प्रान्त के भागलपुर जिले में स्थित विक्रमषिला नालन्दा के समान एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का केन्द्र रहा है। विक्रमषिला के महावीर की स्थापना पालनरेष धर्म पाल (775–800ई0) ने करवायी थी। यहॉ उसने मंदिर तथा मठ वनवाये और उन्हे उदारतापूर्वक अनुदान दिया। यहॉ 160 विहार तथा व्याख्यान के लिए अनेक कक्ष बने हुए थे। प्रत्येक में एक केन्द्रीय कक्ष तथा 108 अध्यापक थे। केन्द्रीय कक्ष को

विज्ञान भवन कहा जाता था। प्रत्येक महाविद्यालय मे एक प्रवेष द्वार होता था तथा प्रत्येक प्रवेष द्वार पर एक–एक द्वार पर पंण्डित बैठता था। द्वार पंण्डित द्वारा परीक्षण किये जाने के बाद ही किसी विद्यार्थी का महाविद्यालय में प्रवेष संभव था। विष्वविद्यालय में विद्यालय में अध्ययन के विषय व्याकरण तर्कषास्त्र मिमांसा तन्त्र विधिवाद आदि थे। आचार्यो मे दीपांकर श्री ज्ञान का नाम विषेष रूप से उल्लेखनीय है, जो यहॉ के कुलपति थे। वे हीनयान, महायान, वैषेषिक तथा तर्कशास्त्र के विद्वान और तिब्बती धर्म के महान लेखक थे। तिब्बती स्रोतों में उन्हे दौ सौ ग्रन्थों की रचना का श्रेय प्रदान किया गया है। बारहवीं शताब्दी मे अभयांकर गुप्त यहॉ के आचार्य थे। तिब्बती एवं संस्कृत मे उन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की थी। अन्य विद्वानो में ज्ञानपाद, वैरोचन, रक्षित, जेतारी, रत्नाकर, शान्ति, ज्ञानश्री, रत्नवज्र, तथागत एवं रक्षिति आदि के नाम प्रसिद्ध हैं। बारहवीं शताब्दी में यहॉ लगभग तीन हजार विद्यार्थी षिक्षा ग्रहण करते थे। इनमे अधिकांषतः तिब्बत के थे। विष्वविद्यालय के हर स्तर पर प्रबंध समिति होती थी। यहॉ के स्नातको को पण्डित की उपाधि दी जाती थी। महापण्डित, उपाध्याय तथा आचार्य क्रमषः उच्चतर उपाधियॉ थी।

इस प्रकार विक्रमषिला ग्यारहवीं–बारहवीं शताब्दी ईसवी में भारत का सर्वाधिक सम्पन्न, सुसंगठित तथा प्रतिष्ठित विष्वविद्यालय था। नालन्दा के ही समान इस विष्वविद्यालय का मुख्य कार्य तिब्बत में भारतीय सभ्यता का प्रचार प्रसार करना था। 1203ई0 में मुस्लिम आक्रान्ता बख्तियार खिलजी ने विक्रमषिला विष्वविद्यालय को भी (दुर्ग के भ्रम मे) ध्वस्त कर यहॉ के भिक्षुओं की हत्या कर दी। तत्कालीन कुलपति शाक्य श्रीभद्र किसी प्रकार जान बचाकर तिब्बत चले गए।

तक्षषिला

वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिण्डी जिले में स्थित तक्षषिला प्राचीन समय में गान्धार राज्य की राजधानी थी। रामायण के अनुसार भरत ने अपने पुत्र तक्ष के नाम पर इस नगर की स्थापना की थी। महाभारत से पता चलता है कि परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने इसे जीता तथा यहीं अपना प्रसिद्ध नागयज्ञ किया था। तक्षषिला की प्रसिद्धि का कारण उसका ख्याति प्राप्त षिक्षा केन्द्र होना था। यहॉ अध्ययन करने के लिए दूर–दूर से विद्यार्थी आते थे जिनमे राजा एवं सामान्य जन दोनो ही सम्मिलित थे। जातको मे उल्लेख मिलता है कि पूरे भारत वर्ष के क्षत्रिय तथा ब्राह्मण कुमार षिल्प सीखने के लिए तक्षषिला के आचार्यो के पास जाते थे। यहॉ सबके साथ समानता का व्यवहार किया जाता था। कोषल के राजा प्रसेनजित, मगध का राजा राजवैद्य जीवक, सुप्रसिद्ध राजनितिज्ञ चाणक्य, बौद्ध विद्वान वसुबन्धु, सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य आदि तक्षषिला के स्नातक थे। बौद्ध साहित्य से पता चलता है कि यह धनुर्विद्या तथा आर्युदकी षिक्षा के लिए पूरे विष्व मे प्रसिद्ध था। चाणक्य यहॉ का प्रमुख आचार्य था। तक्षषिला मे आचार्य अपने वरिष्ठ षिष्यो के सहयोग से षिक्षण कार्य सम्पन्न करते थे। यहॉ न तो आचार्य के षिष्यों की संख्या निष्चित थी न ही अध्ययन की अवधि। सभी विद्यार्थियों को आचार्य षिक्षा दान देते थे। एक जातक मे उल्लेख मिलता हैं कि एक आचार्य 103 राजकुमारो को धनुर्वेद की षिक्षा प्रदान करते थे अर्थात् तक्षषिला के आचार्यो के पास विद्यार्थियो की संख्या लगभग एक सौ रही होगी। तक्षषिला में अध्ययन करने के लिए यह आवष्यक नही था कि सभी विद्यार्थी गुरूकुल में ही वास करें। अनेक राजकुमार अपने रहने की व्यवस्था स्वयं करते थे, परन्तु सामान्य विद्यार्थी गुरू के आवास मे निवास करते थे, जहॉ उन्हे निवास, भोजन तथा अध्ययन की सारी सुविधाएॅ उपलब्ध थीं। धनी विद्यार्थी षिक्षा शुल्क के साथ भोजन तथा आवास शुल्क भी दे दिया करते थें। जो विद्यार्थी निर्धन होते वे शुल्क के बदले दिन में गुरूकुल का कोई काम करते थे। ऐसे विद्यार्थीयों के लिए रात्रि में अध्यापन की व्यवस्था थी।

पष्चिमोत्तर भारत मे स्थित होने के कारण तक्षषिला विदेषी आक्रान्ताओ द्वारा खण्डित किया जाता रहा। हूणों के बर्बर आक्रमण नें यहॉ की समृद्धि को नष्ट कर दिया। ह्वेनसांग के समय यह नगर उजाड हो चुका था। 1863 ईसवी में कनिंघम महोदय नक इस नुरास्थल के खण्डहरों का पता लगाया। 1912 से 1929 ईसवी तक जॉन मार्षल ने यहॉ व्यापक खुदाई कराकर पुरातात्विक महत्व की अनेक वस्तुएॅ प्राप्त की। तक्षषिला को जैन धर्म का तीर्थ स्थल भी कहा गया हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार महात्मा बुद्ध की षिक्षाओ के केन्द्र के रूप में ये सभी विकसित हुए और आगे चलकर ये जन षिक्षा की व्यवस्था भी करने लगें। इस काल मे बौद्ध भिक्षुओ एवं बौद्ध धर्म प्रचारको द्वारा एक नई षिक्षा प्रणाली का विकास किया गया, जिसे बौद्ध षिक्षा प्रणाली कहा गया। यह षिक्षा प्रणाली बौद्ध धर्म एवं दर्षन पर आधारित थी। वैदिक धर्म कि कठोर वर्ण व्यवस्था और कर्मकाण्ड के विपरीत बौद्ध षिक्षा प्रणाली धर्म की समानता, करूणा, समन्वय एवं प्रेम पर आधारित थी।

संन्दर्भ ग्रंन्थ सूची

1. मुखर्जी, आर0 के0; एन्षियन्ट इण्डियन एजूकेषन, दिल्ली, 1960,
2. सिंह, मदनमोहन; बुद्धकालीन समाज और धर्म, दिल्ली, 1993,
3. मुखर्जी, राधाकुमुद; एन्षियन्ट इण्डियन एजूकेषन, दिल्ली, 1960,
4. उपाध्याय, वासुदेव; प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मन्दिर, पटना, 1972,
5. पाण्डे, गोविन्द्रचन्द्र; बौद्ध धर्म के विकास का इतिहास,
6. उपाध्याय, वासुदेव; प्राचीन भारतीय स्तूप गुहा एवं मन्दिर,
7. सिंह, मदन मोहन; बुद्ध कालीन समाज और धर्म, दिल्ली, 1993,
8. मुखर्जी, आर0 के0; एन्षियन्ट इण्डियन एजूकेषन, दिल्ली, 1960,
9. सिंह, मदन मोहन; बुद्ध कालीन समाज और धर्म, दिल्ली, 1993,